यज्ञ / हवन विधि

आचमन-

किसी भी पूजा को करने से पूर्व पवित्र व शुद्ध होना अनिवार्य है। पवित्रीकरण के लिए अपने बाएं में जल लेकर दाहिने से उसे ढंके और निम्न मंत्र के साथ अपने ऊपर एवं सम्पूर्ण पूजा सामग्री के ऊपर उसका मार्जन करें (छिड़कें)।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु,
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

(आत्म शुद्धि के लिए)-

ॐ केशवाय नमः,
ॐ नारायणाय नमः,
ॐ माधवाय नमः।
तीन बार आचमन कर आगे दिये मंत्र पढ़कर हाथ धो लें।
ॐ हृषीकेशाय नमः।।

आसन शुद्धि-

नीचे लिखा मंत्र पढ़कर आसन पर जल छिड़के-
ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रां कुरु चासनम्।।

कुश/पवित्री धारण- निम्न मंत्र से बायें हाथ में तीन कुश तथा दाहिने हाथ में दो कुश धारण करें।

ॐ पवित्रोस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः
प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रोण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।

तिलक-

ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकान्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये।

रक्षासूत्रबंधनः–

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:।
तेन त्वां प्रतिबंध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

दीप पूजन ः– अक्षत रखकर उस पर दीप रखें, दीपक प्रज्ज्वलित कर अक्षत आदि से दीप का पूजन करें।

"शुभं करोतु कल्याणम, आरोग्यं सुखसम्पदाम्।
शत्रुबुद्धि विनाशाय च दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते।
दीपो ज्योति: परब्रह्म, दीपो ज्योतिर्जनार्दन:।
दीपो हरतु मे पापं, दीप ज्योति नमोऽस्तुते॥

स्वस्ति वाचन मंत्र :- जगत के कल्याण के लिए, परिवार के कल्याण के लिए स्वयं के कल्याण के लिए, शुभ वचन कहना ही स्वस्तिवाचन है। मंत्र बोलना नहीं आने की स्थिति में अपनी भाषा में शुभ प्रार्थना करके पूजा शुरू करना चाहिए।

(पूजा के प्रारंभ में हाथ में फूल लेकर निम्न मंत्र का जप करे)

ॐ शांति सुशान्ति: सर्वारिष्ट शान्ति भवतु।
ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः । ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः ।
ॐ वाणीहिरण्य गर्भाभ्यां नमः । ॐ शची पुरन्दराभ्यां नमः ।
ॐ मातृ-पितृ-चरण कमलेभ्यो नमः ।ॐ इष्ट देवताभ्यो नमः।
ॐ कुल देवताभ्यो नमः ।ॐ ग्राम देवताभ्यो नमः ।
ॐ वास्तु देवताभ्यो नमः । ॐ स्थान देवताभ्यो नमः ।
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।
ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन्महा गणाधिपतये नमः ।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः।
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

संकल्पः-

दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प और द्रव्य लेकर संकल्प करे।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतबाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे अमुकक्षेत्रे .... अमुकग्रामे अमुकऋतौ, ...अमुकमासे, ...अमुकपक्षे, ...अमुकतिथौ, ...अमुकवासरे,....... अमुकगोत्रो...... अमुकशर्मा ... सपत्नीकोऽहं श्रीअमुकदेवता प्रीत्यर्थम् ....अमुक कामनया .... कर्मा अहं करिष्ये।

अक्षत सहित जल भूमि पर छोड़ें।

दिक्बन्धन :- (प्रथम गौरीगणेश,शिव,गुरु,पृथ्वी,कलश व अनुष्ठान के देवता आदि का यथा उपचार पूजन करने के पश्चात पीले चावल या पीली सरसों आसपास छिड़क कर दिक्बन्धन करें।)

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेयां गरुड़ध्वजः ।
दक्षिणे पदमनाभस्तु नैऋत्यां मधुसूदनः ॥
पश्चिमे चैव गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः ।
उत्तरे श्री पति रक्षे देशान्यां हि महेश्वरः ॥
ऊर्ध्व रक्षतु धातावो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु ।
अनुक्तमपि यम् स्थानं रक्षतु ॥
अनुक्तमपियत् स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक् ।
अपसर्पन्तु ये भूताः ये भूताः भुवि संस्थिताः ॥
ये भूताः विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ।
अपक्रमंतु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् ।
सर्वेषाम् विरोधेन यज्ञकर्म समारम्भे ॥

गणेश एवं माँ अंबा का ध्यान :-

ॐ गणानां त्वा गणपति ग्वँग् हवामहे,
प्रियाणां त्वा प्रियपति ग्वँग् हवामहे।
निधीनां त्वा निधीपति ग्वँग् हवामहे, वसो मम।
आहमजानि गर्भधमा - त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ अम्बे अम्बिके-अम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥

कलश स्थापना :-

- गणेश जी की मूर्ति को चौकी पर केले के पत्ते या दूर्वा का आसन देकर स्थापित करना चाहिए.
- पूजा करते समय, मुंह उत्तर या पूर्व दिशा की ओर रखना चाहिए.
- गणेश जी की स्थापना के बाद, कलश की पूजा करनी चाहिए.
- कलश को गणेश जी के दाईं ओर रखना चाहिए.
- कलश पर नारियल लपेटना चाहिए.
- कलश में आम का पत्ता, सुपारी, और सिक्का रखना चाहिए.
- कलश के गले में लाल वस्त्र या मौली लपेटनी चाहिए.
- कलश पर दीपक जलाना चाहिए.
- कलश में वरुण देवता का आह्वान करना चाहिए.
- गौरी गणेश की स्थापना के लिए, चौकी पर पीले चावल से स्वास्तिक बनाना चाहिए.
- स्वास्तिक के बीच में लाल चावल रखना चाहिए.
- लाल चावल पर लाल रंग की सुपारी और पीले चावल पर पीले रंग की सुपारी रखनी चाहिए।

अग्निस्थापनम :-

त्वं मुखं सर्वदेवां सप्तार्चिरभिद्यते।
आगच्छ भगवन्न अग्ने, यज्ञेस्मिन सन्न्निद्यो भव।
अग्निं आवाहयामि। स्थापयामि। इहागच्छ। इहतिष्ठ।।

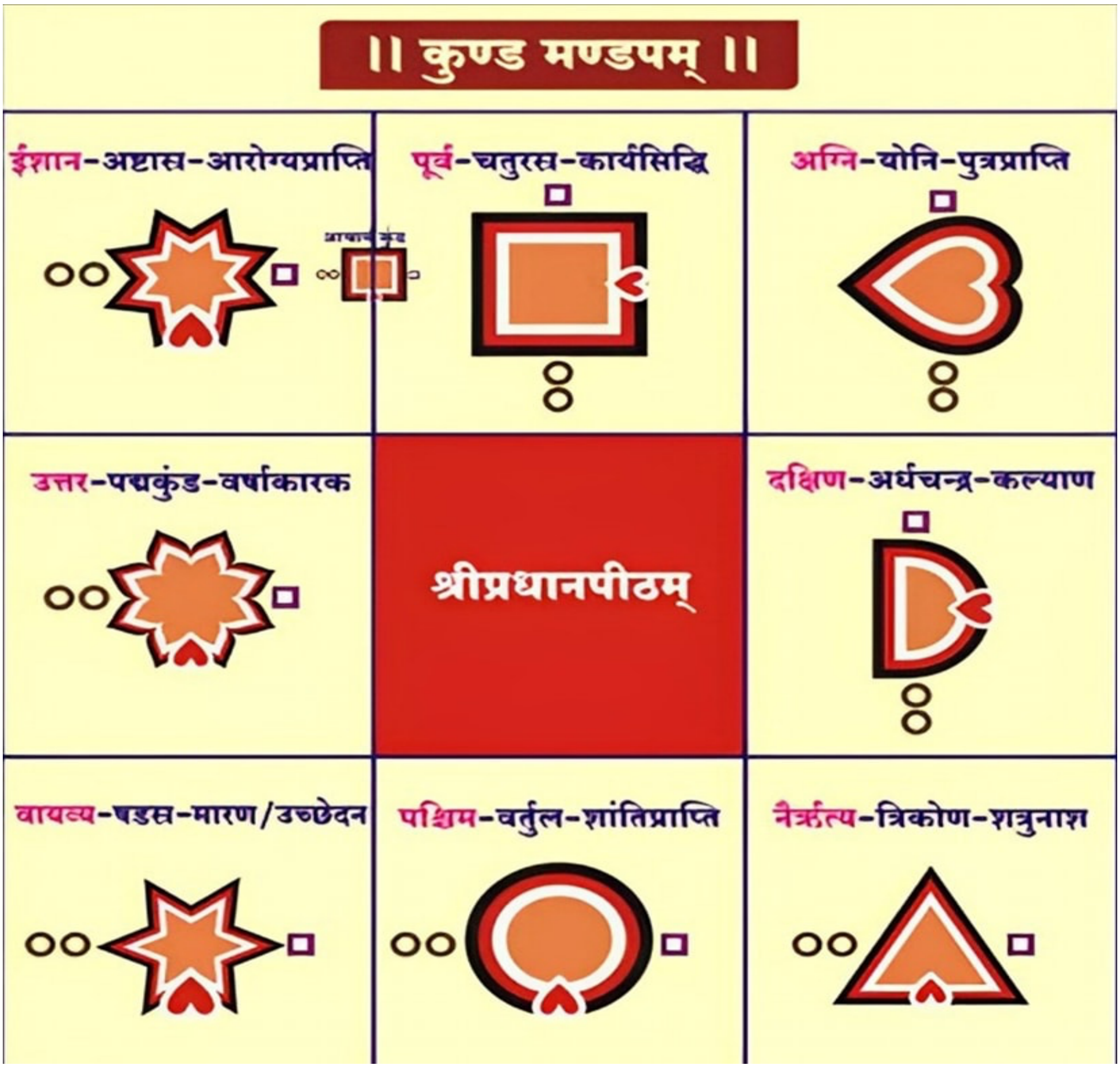

अग्नि में घी से आहुति दें :- सर्वप्रथम सात मन्त्रों से सात आहुतियाँ केवल घृत की दी जाती हैं । इन आहुतियों के साथ हवन सामग्री नहीं होमी जाती । घी पिघला हुआ रहे । स्रुवा को घी में डुबाने के बाद उसका पैंदा घृत पात्र के किनारे से पोंछ लेना चाहिए, ताकि घी जमीन पर न टपके । स्वाहा उच्चारण के साथ ही आहुति दी जाए । स्रुवा लौटाते समय घृत पात्र के समीप ही रखे हुए, जल भरे प्रणीता पात्र में बचे हुए घृत की एक बूँद टपका देनी चाहिए ।

१- ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदं न मम॥

२- ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय इदं न मम॥

३- ॐ अग्नये स्वाहा । इदं अग्नये इदं न मम॥

४- ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय इदं न मम॥

५- ॐ भूः स्वाहा । इदं अग्नये इदं न मम॥

६- ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे इदं न मम॥

७- ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय इदं न मम॥

निम्न मंत्र से तीन बार आहुति करें,

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह,
लोहिताक्ष सर्व कार्याणि साधय स्वाहा।।

उसके बाद हवन सामग्री से हवन करें,
नवग्रह मंत्र :-

ॐ सूर्याय नमः स्वाहा

ॐ चंद्रमसे नमः स्वाहा

ॐ भौमाय नमः स्वाहा

ॐ बुधाय नमः स्वाहा

ॐ गुरवे नमः स्वाहा

ॐ शुक्राय नमः स्वाहा

ॐ शनये नमः स्वाहा

ॐ राहवे नमः स्वाहा

ॐ केतवे नमः स्वाहा

गायत्री मंत्र :-

ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात् ।

ॐ गणेशाय नम: स्वाहा,
ॐ भैरवाय नम: स्वाहा,
ॐ गुं गुरुभ्यो नम: स्वाहा,
ॐ कुल देवताभ्यो नम: स्वाहा,
ॐ स्थान देवताभ्यो नम: स्वाहा,
ॐ वास्तु देवताभ्यो नम: स्वाहा,
ॐ ग्राम देवताभ्यो नम: स्वाहा,
ॐ सर्वेभ्यो गुरुभ्यो नमः स्वाहा ,
ॐ सरस्वती सहित ब्रह्माय नम: स्वाहा,
ॐ लक्ष्मी सहित विष्णुवे नम: स्वाहा,
ॐ शक्ति सहित शिवाय नम: स्वाहा

माता के नर्वाण मंत्र से 108 बार आहुतियां दे
"ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै स्वाहा"

गणपति व माँ गौरी/दुर्गा की आहुति करें।

ॐ गणानान्त्वा गणपत ठ़्• हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ठ़्•हवामहे। निधीनान्त्वा निधिपति ठ़्• हवामहे वसो मम। आहम जानि गर्भधमा, त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा,
इदं गणपतये न मम।

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपील-वासिनी स्वाहा।।
ॐ अम्बे स्वाहा।
ॐ अम्बिके स्वाहा।
ॐ अम्बालिके स्वााहा।

- **अब अनुष्ठान से संबंधित सभी आहुतियां करें।**

दुर्गा सप्तशती के श्लोकों से हवन करें।

स्विष्टकृत होम :-

यह प्रायश्चित्त आहुति भी कहलाती है । आहुतियों में जो कुछ भूल रही हो, उसकी पूर्ति के लिए यज्ञाग्नि के लिए नैवेद्य समर्पण के रूप में यह कृत्य किया जाता है । स्विष्टकृत् आहुति में मिष्टान्न समर्पित किया जाता है । स्विष्टकृत् आहुति अपने स्थान पर बैठे हुए करें,

ॐ यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं, यद्वान्यूनमिहाकरम् ।
अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे ।

अग्नये स्विष्टकृते सुहुत हुते, सर्वप्रायश्चित्त आहुतीनां कामानां, समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा ।
इदं अग्नये स्विष्टकृते इदं न मम॥

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदं अग्नये स्विष्टकृते न मम |

पूर्णाहुति :-

हवन के बाद गोला में कलावा बांधकर फिर चाकू से काटकर ऊपर के भाग में सिन्दूर लगाकर घी भरकर चढ़ा दें जिसको वोलि कहते हैं। फिर पूर्ण आहूति नारियल में छेद कर घी भरकर, लाल तूल लपेटकर धागा बांधकर पान, सुपारी, लौंग, जायफल, बताशा, अन्य प्रसाद रखकर पूर्ण आहुति मंत्र बोले-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदम् पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥।

अब परिवार सहित आरती करके हवन संपन्न करें और माता से क्षमा मांगते हुए मंगलकामना करें।

मन्त्र पुष्पांजलि-

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

भस्मधारण :- यज्ञकुंड से सुरवा में भस्म लेकर तिलक करें।

प्रदिक्षणा :- हवनकुंड की ३ परिक्रमा करें।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्चन्तु प्रदक्षिण: पदे पदे।

क्षमा प्रार्थना :-

ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम

पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर/परमेश्वरी।

ॐ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर/सुरेश्वरी

यत्पूजितं माया देवं/देवि परिपूर्ण तदस्तु मे।।

विसर्जन :– थोड़े-से अक्षत लेकर देव स्थापन और हवन कुंडमें निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए चढायें।

1.देवता के लिए -

ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रम्हादयो देवा: तत्र गच्छ हुताशन।।

2.देवी के लिए -

गच्छ देवी महामाया कल्याणं कुरु सर्वदा।
यथा शक्ति कृता पूजा भक्त्या कमललोचले।।
गच्छन्तु देवताः सर्वे दत्वा मे वरमीप्सितम।
त्वम गच्छ परमेशानि सुख सर्वत्र गनै: सह।।

शांति पाठ:- यज्ञ, पूजा आदि के समापन पर किया जाता है,

ॐ द्यौ: शान्तिर अन्तरिक्षँ शान्ति:,
पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:।
वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति:,
सर्वँ शान्ति:, शान्तिरेव शान्ति:, सा मा शान्तिरेधि।
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥